

Sonam Dala

4th Feb 2022

Assistant Professor (Guest Faculty)

Friday

Dept. of Geography

A.N.D. College, Shahpur Patory, Samastipur

For B.A. - II (Hons)

Paper - III, Geography of India & Bihar

Lecture - 32

मानसून और भारत का आर्थिक जीवन तथा भूमंडलीय तापन

मानसून और भारत का आर्थिक जीवन :-

- (i) मानसून वह धुरी है जिस पर समस्त भारत का जीवन एक घूमता है, क्योंकि भारत की 64% जनता मरणा-पौष के लिए खेती पर निर्भर करती है, जो मुख्यतः 60-70 मानसून पर आधारित है।
- (ii) हिमालयी प्रदेशों के अतिरिक्त शेष भारत में वर्ष भर यथेष्ट जमीं रहती है, जिससे वर्ष भर खेती की जा सकती है।
- (iii) मानसून जलवायु की द्वैतीय विभिन्नता नाना प्रकार की फसलों को उगाने में सहायक है।
- (iv) वर्षा की परिवर्तनीयता देश के कुछ भागों में सूखा अथवा बाढ़ का कारण बनती है।
- (v) भारत में कृषि की समृद्धि वर्षा के सही समय पर आने तथा उसके पर्याप्त वितरित होने पर निर्भर करती है। यदि वर्षा नहीं होती तो कृषि पर इसका पुरा प्रभाव है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहाँ सिंचाई के साधन विकसित नहीं हैं।
- (vi) मानसून का अचानक प्रस्फोट देश के व्यापक क्षेत्रों में सूखा अपरदन की समस्या उत्पन्न कर देता है।

(vii) उत्तर भारत में शीतलष्ण कटिबंधीय चक्रवातों द्वारा होने वाली शीतकालीन वर्षा रबी की फसलों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होती है।

(viii) भारत की जलवायु की क्षेत्रीय विभिन्नता मॉजन, वस्त्र और अवासों की विविधता में उजागर होती है।

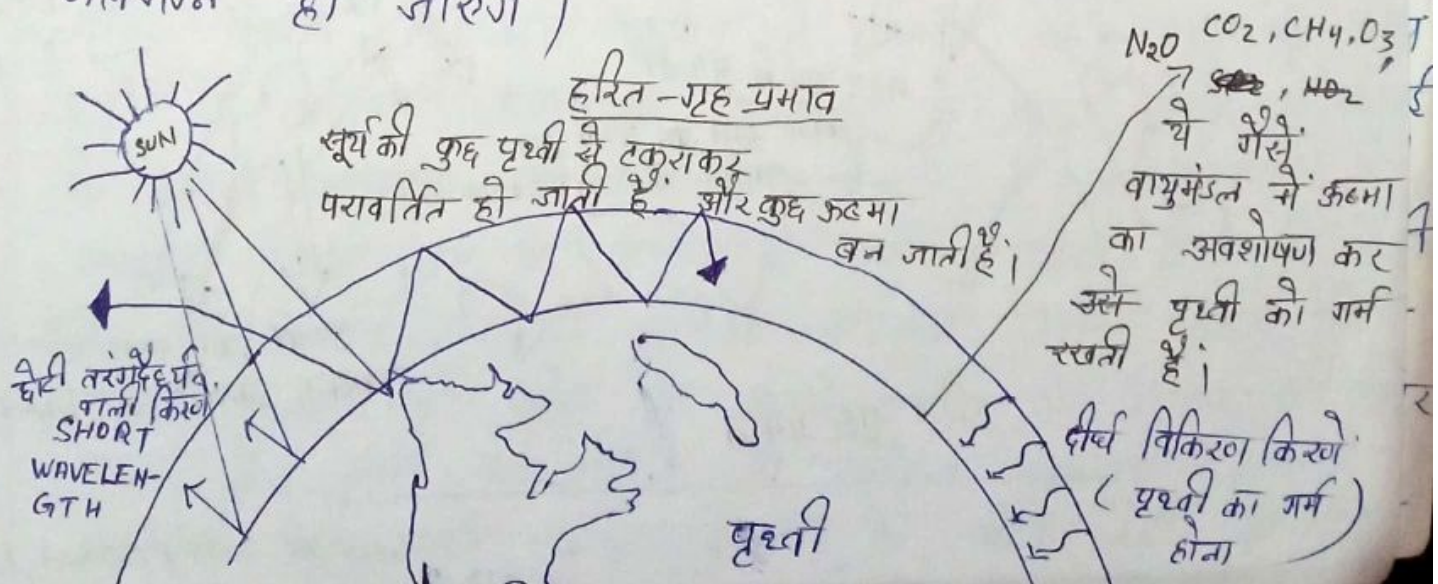
भूमंडलीय तापन

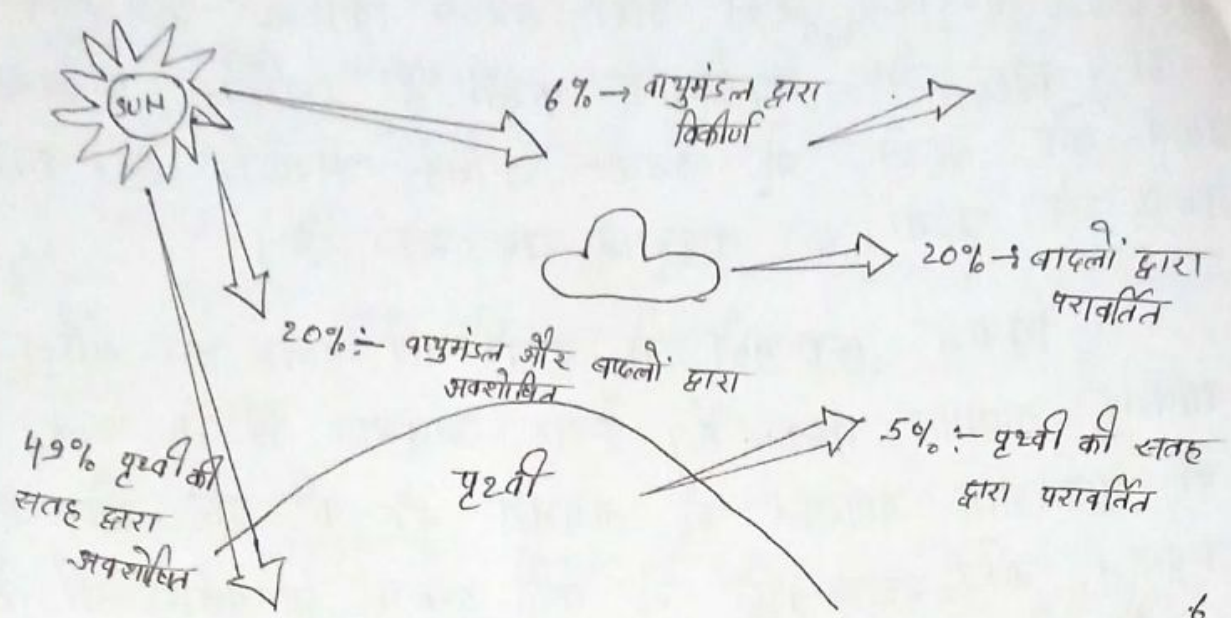
परिवर्तन प्रकृति का नियम है। शतकाल में जलवायु में भी भूमंडलीय एवं स्थानीय स्तर पर परिवर्तन हुए हैं। जलवायु में परिवर्तन आज भी हो रहे हैं, किंतु ये परिवर्तन अगोचर हैं। सूर्यजामिक साक्ष्यों के अनुसार एक समय पृथ्वी के विशाल भाग वर्ष से ढके थे। प्राकृतिक कारकों के अतिरिक्त भूमंडलीय तापन के लिए बड़े पैमाने पर औद्योगिकीकरण तथा वायुमंडल में प्रदूषणकारी गैसों की वृद्धि (जैसी मानवी क्रियाएँ भी महत्वपूर्ण उत्तरदायी कारक हैं) भूमंडलीय तापन की बात जब भी की जाती है तो 'हरित-गृह-प्रभाव' का जिक्र जरूर होता है।

विश्व के तापमान में काफी वृद्धि हो रही है। मानवीय क्रियाओं द्वारा उत्पन्न कार्बन डाईऑक्साइड की वृद्धि चिंता का मुख्य कारण है। जीवारम ईंधनों के जलने से वायुमंडल में इस गैस की मात्रा क्रमशः बढ़ रही है। कुछ अन्य गैसें जैसे मीथेन, क्लोरो-फ्लोरो कार्बन, ओजोन और नाइट्रस ऑक्साइड वायुमंडल में अल्प मात्रा में विद्यमान हैं; इन्हें तथा कार्बन डाईऑक्साइड को हरितगृह गैसें कहते हैं। कार्बन डाईऑक्साइड की तुलना में अन्य चार गैसें - मीथेन, क्लोरो-फ्लोरो कार्बन, ओजोन और

जैसे दीर्घ तरंगी विकिरण का ज्यादा अचढ़ी तरह से अवशोषण करती हैं, इसीलिए हरितगृह प्रभाव को बढ़ाने में उनका अधिक योगदान है। इन्हीं के प्रभाव से पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है।

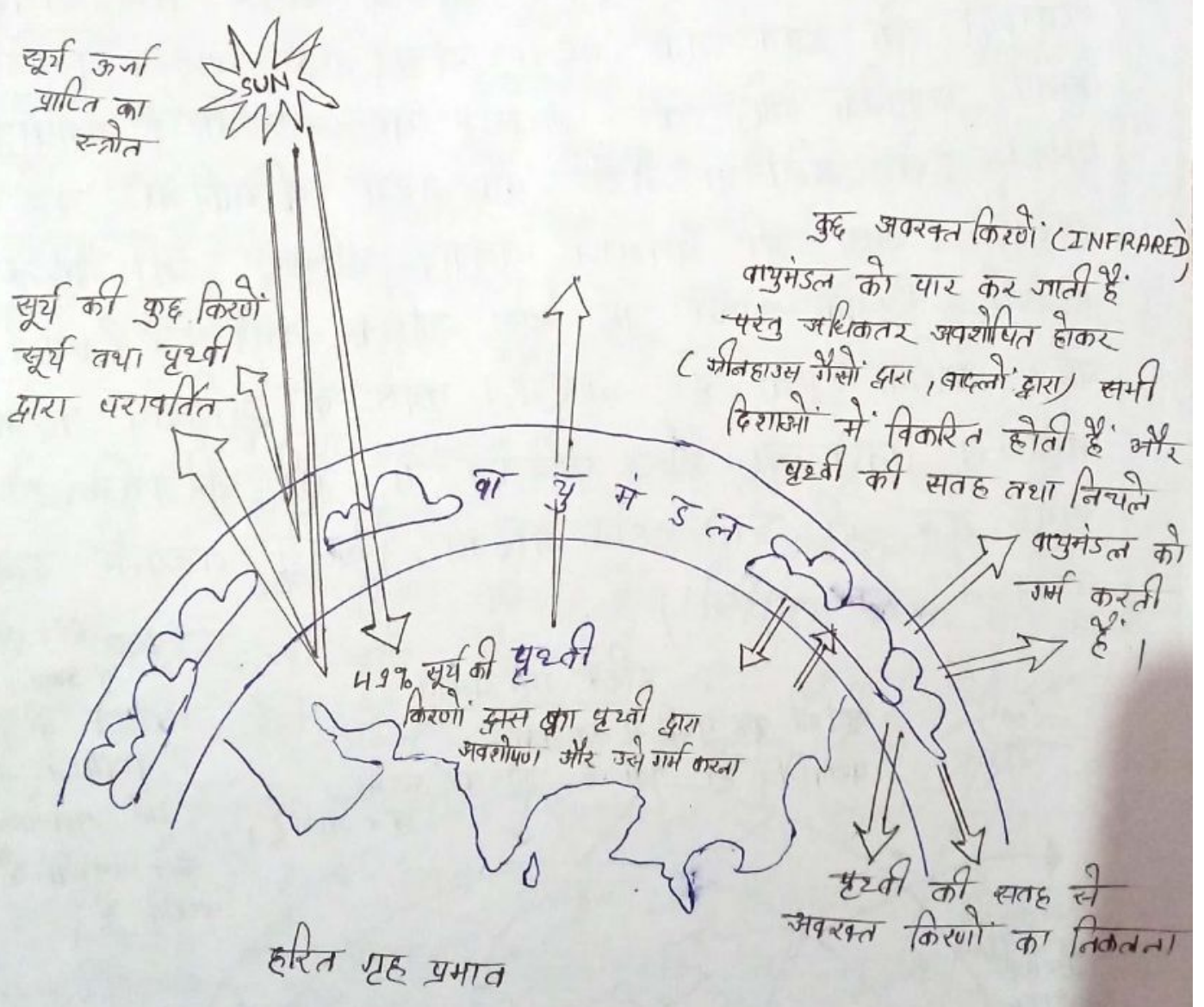
विगत 150 वर्षों में पृथ्वी की सतह का औसत वार्षिक तापमान बढ़ा है। ऐसा अनुमान है कि सन् 2100 में समुन्द्रीय तापमान में लगभग 2°C की वृद्धि हो जाएगी। इनमें से एक है गर्मी के कारण हिमनियों और समुद्री प्रचलित पूर्वानुमान के अनुसार औसत समुद्र तल शकी शताब्दी के अंत तक 48 cm ऊंचा हो जाएगा। इसके कारण प्राकृतिक वादों की संख्या बढ़ जाएगी। जलवायु परिवर्तन से मलेरिया जैसी कीटजन्य बीमारियाँ बढ़ जाएंगी। साथ ही वर्तमान जलवायु सीमारें भी बदल जाएंगी, जिसके कारण कुछ भाग अधिक जलसिक्त (WET) और अधिक शुष्क हो जाएंगे। कृषि के प्रतिरूप बदल जाएंगे। जनसंख्या और पारितंत्र में भी परिवर्तन होगा। समुद्र तल भी ऊंचा हो जाएगा, जिससे तटवर्ती इलाके जलमग्न हो जाएंगे।





सूर्य की किरणों का उपयोग एवं पृथ्वी

6
20
20
49
<hr/>
100%



भारत की जलवायु (समाप्त)